बलिहारी।।३।।

पद २५२

(राग: गौरी - ताल: धुमाळी)

अब कहां गयो घनश्याम बिहारी ।।ध्रु.।। खंब फोड नरसिंग उधरी।

हिरण्यकश्यपु उर फारे।।१।। द्रुपदसुताकी लज्जा राखी। खेंचत

चीर दु:शासन हारे।।२।। माणिकके प्रभु नाथ कृष्णजी चरनकमल